हार्दिक शुभकामनाओं सहित...

मोहनलाल बोल्या
37, शांति निकेतन कॉलोनी,
बेदला-बड़गांव लिंक रोड़,
उदयपुर-313011 (राजस्थान)
मोबाइल : 94613 84906

नवकार मंत्र किसी व्यक्ति विशेष से संबंधित नहीं है परन्तु यह श्रेष्ठ गुणों के प्रति आदरभाव है इसमें किसी जाति, धर्म, सम्प्रदाय, देश अथवा महाद्वीप के प्रति भी कोई भी भेदभाव नहीं है। यह तो सम्पूर्ण गुणों की पुजा है न कि किसी व्यक्ति में नवकार मंत्र के गुण विद्यमान है तो वह सम्मानीय तथा वन्दनीय है। चाहे वह जैन, बुद्ध, ईसाई, हिन्दु या अन्य किसी धर्म का अनुयायी ही क्यों न हो

श्री शंखेश्वर पार्श्वनाथ भगवान
श्री शंखेश्वर तीर्थ (गुजरात)

श्री ऋषभदेव भगवान
श्री केसरिया जी तीर्थ
(धुलेवा-मेवाड़)

श्री सरस्वती देवी

श्री नाकोड़ा भैरवदेव

श्री अजितनाथ जी, तारंगा (गुजरात)

श्री वासूपूज्य भगवान (श्वे.), चम्पापुरी

श्री चन्द्रप्रभु भगवान, चन्द्रपुरी (बिहार)

श्री श्रेयांसनाथ जी, सिंहपुरी (बिहार)

समर्पण : परम उपकारी गुरूदेवों को समर्पित

देशनादक्ष, प्राचीन शास्त्रों के
जीर्णोद्धारक दिवगंत
आचार्यश्री हेमचंद्र सूरीश्वर जी म.सा.

वर्धमान तपोनिधि
आचार्यदेव विजय
श्री कल्याण बोधिसूरीश्वर जी महाराज

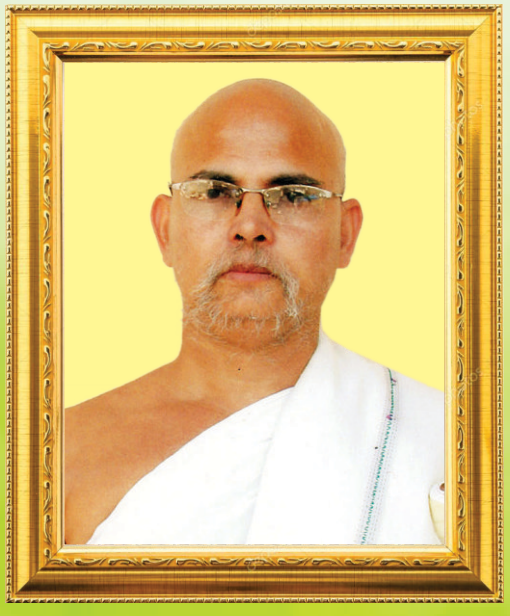

आचार्यश्री विजयश्री
अपराजित सूरीश्वर जी महाराज

सिद्धहस्त लेखक, आचार्य विजय
श्री पूर्णचंद्र सूरीश्वर जी म.सा.

अनुक्रमणिका

तारे वह तीर्थ	10-11
लेखक को जैन धर्म की ओर अग्रसर करने वाले प्रेरणा स्त्रोत	12-13
प्रस्तावना	14-15
दिव्य आशीष	16
लेखक का अभिमत	17-20
शुभ संदेश : श्री जैन श्वेताम्बर महासभा, उदयपुर	21
शुभ संदेश : श्री जैन श्वेताम्बर चतराम का उपासरा, उदयपुर	22
शुभ संदेश (श्री हरकलाल पामेचा)	23
पूर्व पुस्तकों के प्रति विद्वानों के मत	24-27
(रमेश कुमार वैष्णव, डॉ. जगदीश व्यास, मुम्बई, कन्हैयालाल पुरोहित)	
पुस्तक प्रकाशन में अर्थ सहयोगी, आभार प्रदर्शन, संदर्भित पुस्तकों की सूची	28
लेखक का जीवन परिचय	29
आत्मिक अभिव्यक्ति / उद्‌बोधन	30-33
आत्मीय और भावनात्मक संदेश : बहुत बड़ा उपहार, आपका आभार	34-36
लोक की पृष्ठ भूमि	37-42
अढाई द्वीप :	43-52
जम्बूद्वीप भरत क्षेत्र	53-54
दूसरा द्वीप : धातकी खण्ड द्वीप	55-56
तीसरा द्वीप : पुष्करवर द्वीप	57-62
आठवां द्वीप - नंदीश्वर द्वीप	63-65
उर्ध्व-लोक	66-74
जम्बूद्वीप का समतल प्रारूप	75-77
जंबूद्वीप का संक्षिप्त अवलोकन	78-92
उर्ध्व लोक वर्णन	93-99
तिर्च्छालोक में जिनमंदिर	100-118
ऊर्ध्वलोक में जिनमंदिर	119-121
अधोलोक में जिनमंदिर	122-128

तारे वह तीर्थ

नदी दो किनारों से बहती है वैसे ही मनुष्य विषय एवं कषाय के दो प्रवाह में तना रहा है। नदी को पार करने हेतु नौका की आवश्यकता होती है, वैसे ही आत्मा का उत्थान एवं उर्ध्वगमन तीर्थों के माध्यम से होता है। संसार में विषय ओर कषाय रुपी सागर में निमग्न आत्मा को तारे वह तीर्थ कहलाता है।

वैसे तो हमारे नगर में रहे जिनेश्वर देवों के जिनालय भी तीर्थ ही है। उन जिनेश्वर भगवन्तों की प्रतिमा में तथा अन्य तीर्थस्थलों की प्रतिमा में कोई भेद नहीं है फिर भी उन तीर्थों का वातावरण हमारी आत्माओं पर विशेष प्रभाव करता है।

क्षेत्र का प्रभाव आत्मा पर जबर–दस्त पड़ता है। जैसे क्षेत्र में आप जाएँगे वैसे विचार आपको आएँगे। अच्छे क्षेत्र में जाने पर अच्छे और बुरे क्षेत्र में जाने पर बुरे विचार आते है। क्षेत्र के प्रभाव को बताने वाली श्रवणकुमार की कहानी जगप्रसिद्ध भी है। श्रवणकुमार सम्पूर्ण पितृभक्त था। परंतु वह जब दण्डकारण्य में प्रवेश करता है कि उसके विचार में परिवर्तन आया। जो पुत्र अपने माता पिता को आज तक अपने स्कंधों पर उठाकर 68 तीर्थों की यात्रा भक्ति से करवा रहा था, आज वहां श्रवणकुमार पिता से अपने परिश्रम के रुपये मांग रहा हे। ओर पिता के कहने पर दण्डकारण्य पार करवाने के बाद उसे स्वयं को ही अपने किये कार्य का भारी पश्चाताप होता है। वह माता पिता के चरणों में गिरकर अपने अपराध की क्षमा मांगता है। तब अन्ध पिता कहते है बेटा..... । अपराध तेरा नही इस क्षेत्र की भूमि का है।"

सिद्धाचल भूमि पर जाने से विचारों में शुद्धि होती है। तथा सिनेमा थियेटरों में जाने से विचारों में विकृति आती है। अतः तीर्थ क्षेत्रों को पवित्र कहा गया है। पतित को पावन करे वह तीर्थ.. ।

तीर्थ दो प्रकार के है :

1) स्थावर तीर्थ 2) जगम तीर्थ

1) स्थावर तीर्थ : जहां पर तीर्थंकर परमात्माओं के कल्याणक सम्पन्न हुए हो अथवा जहाँ परमात्मा स्वयं संदेह पधारे हो वह भूमि तीर्थ कहलाती है। अथवा जिन मंदिरों की प्रतिष्ठा को सौ वर्ष से ज्यादा हो गये हो वे जिनालय भी स्थावर तीर्थ कहलाते है।

जैसे हस्तिनापुर, पालीताणा, समेतशिखर, शंखेश्वर, नागेश्वर, पावापुरी, चम्पापुरी, अवंतिका, भोयणीजी, आबूजी, गिरनारजी, आदि स्थावर तीर्थ हैं

2) जंगम तीर्थ : पूज्य श्रमण भगवन्त, पूज्य श्रमणी भगवन्त, श्रावक और श्राविका रुप चतुर्विध संघ जो स्वयं ग्रामानुग्राम विहार करके संसारसागर से पार उतरता है तथा जिनवाणी के द्वारा भव्य प्राणियों को संसार सागर पार होने का मार्ग दिखाता है वह जंगम तीर्थ है।

प्रस्तुत पुस्तक में हम स्थावर तीर्थों की चर्चा कर रहे है। स्थावर तीर्थ भी दो प्रकार के है :

1) शाश्वत तीर्थ 2) अशाश्वत तीर्थ।

1) **शाश्वत तीर्थ :** जिनका न तो सर्जन है न विसर्जन है वे तीर्थ शाश्वत कहलाते है।

2) **अशाश्वत तीर्थ :** जिनका निर्माण मनुष्य या देव द्वारा किया गया हो वे अशाश्वत कहलाते है। प्रस्तुत पुस्तक में हम आपको शाश्वत तीर्थों की जानकारी दे रहे है।

शायद आपने सकलतीर्थ तो सुना ही होगा। उसमें तीन लोक में रहे शाश्वत अशाश्वत तीर्थों को तथा वहां रही सभी प्रतिमाओं को वंदन किया है। सर्वप्रथम जैन दृष्टि से तीन लोक की परिभाषा समझना आवश्यक है।

केवलज्ञान होने के पश्चात् प्राणीमात्र के कल्याण के लिए तीर्थंकर भगवान ने विश्व का चित्र हमें निम्न बताया है।

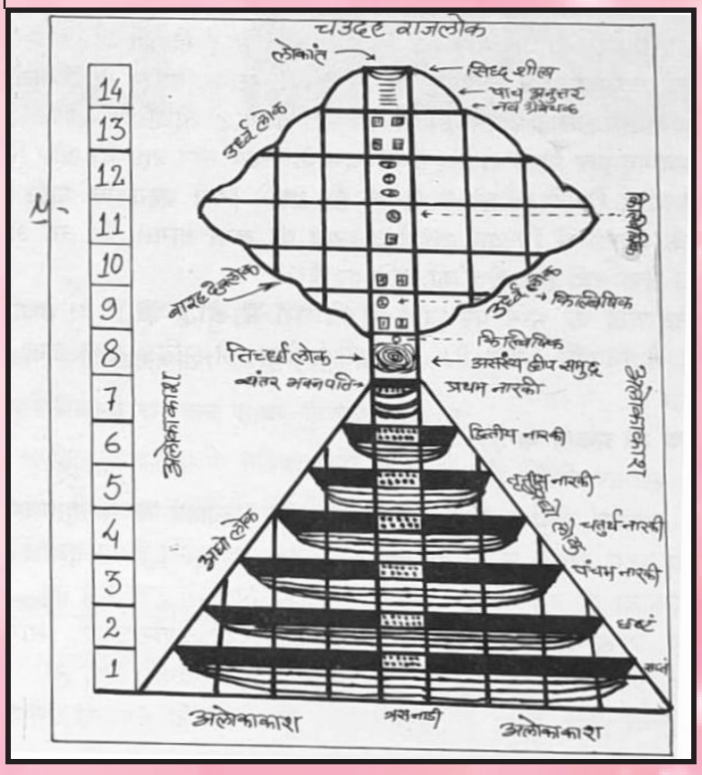

दोनों पैर फैलाकर कमर पर हाथ रखकर खड़े हुए मनुष्य का आकार ही जैन दृष्टि से विश्व का आकार माना गया है। जैसा कि चित्र में बताया गया है।

इस चौदह रजुलोक को तीन भागों में विभाजित किया गया है। ऊपर का भाग उर्ध्वलोक कहलाता है। नीचे का भाग अधोलोक कहलाता है। तथा बीच का भाग तिर्यक् लोक कहलाता है।

अधोलोक, उर्ध्वलोक एवं तिर्यक् लोक (मध्यलोक) इन तीनों लोक में शाश्वत जिन मंदिर एवं शाश्वत जिन प्रतिमाएँ विराजमान है। सर्वप्रथम ऊर्ध्वलोक में जिन मंदिर है हम.....। जिसका उदाहरण के रूप में चित्र दिया हुआ है।

लेखक को जैन धर्म की ओर अग्रसर करने वाले प्रेरणा स्त्रोत

पू. आचार्यश्री
कान्तिसागर जी म.सा.

सर्वप्रथम मेरे प्रेरणा स्त्रोत मेरे पूज्य पिताजी थे। लेखक को अपने पिताजी के साथ संवत्सरी के पौषध के अवसर पर आराधना भवन में उनकी आवश्यक सामग्री के साथ जाना पड़ा था। इसके पूर्व कभी–कभी दर्शन व पूजा करने का अवसर भी मिला था। नवकार महामंत्र बोलना व जाप करना।

पूज्य मुनि श्री कान्ति सागरजी व श्री दर्शन सागर जी म.सा. के चातुर्मास का सुनहरा अवसर। उनके दर्शन व प्रवचन का लाभ मिलना। उनके प्रवचन की भाषा बहुत ही मधुर व गीत भजन से आच्छादित थी। कल्पसूत्र का वाचन खड़े–रहकर करना व अच्छी समझाइस, आकर्षण का मुख्य केन्द्र था। लेखक की दोनों छोटी बहनो का नियमित रूप से प्रवचन सुनने जाना व परिवार के अन्य बंधुओं को भी इस हेतु प्रेरित करना। पूज्य श्री कांतिसागर जी म.सा. की वजह से लेखक का जैन धर्म की ओर झुकाव हुआ, यानि पूज्य श्री इनके प्रेरणा श्रोत थे। विहार के समय पूज्य श्री के साथ कुछ दुरी तक पैदल चलना।

एक बार लेखक को भी ऋषभदेव जी तीर्थ की यात्रा पैदल संघ के साथ जाने का सुअवसर प्राप्त हुआ। महाराज श्री की धर्मदेशना सुनकर धर्म के प्रति अग्रसर होता गया।

लेखक का पदस्थापन बाँसवाड़ा में था। पूज्य महाराज श्री का नागेश्वर पारसनाथ तीर्थ पर दादा गुरू की प्रतिष्ठा के कार्यक्रम में बाँसवाड़ा होकर जाने का कार्यक्रम था। महाराज श्री उस समय दानपुर में एक पाठशाला में विराज रहे थे। लेखक ने भी वहाँ दर्शन किये उस समय पूज्य श्री ने एक प्रश्न किया कि सेवानिवृति के पश्चात् क्या कार्य करने का लक्ष्य है।

आपने सुझाव दिया कि जैन धर्म के लिए कुछ कार्य करने का मानस बनावे। पठन कर उसे लिपिबद्ध करने बाबत् भी विचार हुआ। उस समय तो मैं मौन रहा। समय कब क्या करवाता हे, यह कोई नहीं जानता है।

राज्य सेवा से सेवानिवृति के पश्चात् अहमदाबाद के समाचार पत्र में यह खबर पढ़ने का अवसर आया कि एक धातु की देवीय प्रतिमा चोरी से प्राप्त हुई है जिसकी अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर मूल्य 2.5 करोड़ रुपये बताई गई है। जिसकी भी यह प्रतिमा है। वह उसे प्राप्त कर सकता है, लेकिन कोई भी व्यक्ति इसे लेने वाला नहीं मिला।

इस समाचार पत्र को पढ़ने के पश्चात् लेखक के मानस में यह विचार आया कि क्यों नहीं इस कार्य को किया जाए। जिसमें प्रतिमा की लम्बाई, ऊँचाई, शिलालेख एवं प्राचीनता बाबत् सामग्री का समावेश हो।

सर्वप्रथम इस कार्य का शुभारम्भ उदयपुर शहर के श्वेताम्बर मंदिरों से किया गया। उसके पश्चात् देलवाड़ा, उदयपुर, राजसमन्द, चित्तौड़गढ़–प्रतापगढ़, भीलवाड़ा–राणकपुर, डुँगरपुर–बाँसवाड़ा, सिरोही व पाली जिलों के जैन श्वेताम्बर मंदिरों का सर्वेक्षण कार्य, फोटोग्राफी, प्राचीनता व प्रतिमाओं की लम्बाई, ऊँचाई, शिलालेखों ऐतिहासिकता बाबत् जानकारी कर इन्हे पुस्तकों के रूप में प्रकाशन का कार्य किया। 1995 से शुरू हुई यह यात्रा आज भी अनवरत रूप से जारी है। आँखों की रोशनी मंद होने के बावजूद भी यह कार्य अन्य बंधुओं के सहयोग से चलता रहा। नवकार मंत्र महासभा पत्रिका का प्रकाशन, जैन आगम, जिन–दिग्दर्शन (प्रभु आपके द्वार) केसरिया जी तीर्थ का इतिहास, मरूधरा के जैन मंदिर, 24 तीर्थंकर आदि 15 पुस्तकें आज तक प्रकाशित हो चुकी है। मैंने अपने जीवन का उद्देश्य भी यही बना दिया है। इन पुस्तकों का समाज के प्रबुद्ध जनों द्वारा एवं विभिन्न संस्थाओं में उपयोग हो रहा है। शोध कार्य में भी इनका अनवरत उपयोग किया जा रहा है। पुस्तकों की मांग बहुत होने पर भी मेरे द्वारा अब इनका प्रकाशन संभव नहीं है। फोटो–स्टेट करके इनका उपयोग करने की सलाह दी जा रही है।

इस देवीय कार्य में गुरू भगवंतों व अन्य धर्म–प्रेमी संस्थाओं का भरपुर सहयोग प्राप्त हुआ है। धर्म प्रेमी बंधुओं के सहयोग को भी भुलाया नही जा सकता है। नैत्र ज्योति नहीं होने के पश्चात् भी मेरी 6 पुस्तकों का प्रकाशन मेरे द्वारा किया गया। इस कार्य में पारिवारिक बंधुओं के सहयोग को भी भुल नहीं सकता हुँ। श्री हरकलाल जी पामेचा का मुझे सहयोग 2005 से मिल रहा है। सभी सहयोगी बंधुओं गुरू भगवंतों के प्रति बहुत बहुत आभार। पू. श्री कांतिसागर जी माहराज साहब द्वारा मुझे इस प्रकार के कार्य हेतु आर्शीवाद प्रदान करना मेरे जीवन की राह बदलने में सहायक बना। एक बार पुनः आचार्य श्री के प्रति आभार।

मोहनलाल बोल्या

लेखक व प्रकाशक

प्रस्तावना

आज के इस युग में धर्म के प्रति अपनी–अपनी श्रद्धा एवं विश्वास की भावना प्रबल होती है, ऐसा होना भी चाहिये, लेकिन अन्य धर्मों का अनादर भी नही करना चाहिये। सभी धर्मों ने मोक्ष व मुक्ति का ही मार्ग बताया है, मार्ग अलग–अलग होने पर भी मंजिल एक ही है।

हर धर्म की कोई न कोई परम्परा प्रचलित है, जो हजारों वर्षों से चली आ रही है, हम इसे अपना रहे है क्योंकि प्रारम्भ से चल रही है ये परम्पराएँ किसी न किसी अनुभव व घटना के कारण ही बनती है पूर्व में ज्ञान का महत्व रहा हे और संत–महात्माओं की स्मरण शक्ति भी अच्छी थी, उन्हें सारा ज्ञान कंठस्थ हो जाता था। समय–समय पर कंठस्थ ज्ञान एक पीढ़ी से दुसरी पीढ़ी को प्रेषित किया जाता था। भगवान महावीर के निर्वाण के 994 वर्षों तक यह प्रक्रिया अनवरत जारी रही। उसके पश्चात् समय–काल व परिस्थिति को देखते हुए देवद्धिगणि क्षमा–श्रमण ने आगमों को लिपीबद्ध किया।

जैन आगमों के आधार पर जैन धर्म को तीन लोकों में बाँटा गया है। अन्य धर्मों में भी ऐसा ही बताया गया है। जैन धर्म में तीन अदृश्य लोक है, जो निम्न प्रकार से है (1) अधो लोक (2) मध्य लोक (3) उर्द्धवलोक लेखक ने इस अदृश्य लोक का वर्णन करने का प्रयास किया है।

जैन शास्त्रों/साहित्य के अनुसार जैन आगमों में जैन सिद्धान्त के तथ्यों पर विशेष सामग्री प्रदर्शित की गई है। आज सभी समाजों में स्वाध्याय का अभाव है। लेखक के मन में यह विचार आया कि महत्वपूर्ण तथ्यों को समाज के सम्मुख प्रकट किया जाए, जिससे वास्तविकता का ज्ञान हो सके। यद्यपि कुछ साधु भगवंतों ने इस जटिल तथ्यों को अपने प्रवचनों के माध्यम से समझाने का अथक प्रयास किया है लेकिन इसका विशष प्रभाव श्रावक–श्राविकाओं पर नहीं पड़ता है। यह विषय बहुत ही जटिल है, जिसे सुनने मात्र से समझना संभव नहीं है। जैन आगमों व अन्य ग्रन्थों में जो तथ्य अदृश्य है, उनको संक्षिप्त रूप में प्रस्तुत पुस्तक में बताने का प्रयास किया गया है।

यदि हम जैन साहित्य का अवलोकन करे तो यह ज्ञात होगा कि वर्तमान चौबीसी के पूर्व भी कई चौबीसी हो गई है। इतिहास के झरोखे से देखने पर पता चलता है कि वर्तमान चौबओसी के प्रथम तीर्थंकर श्री आदिनाथ भगवान (ऋषभदेव) हुए जिनकी आयु 84 लाख पूर्व रही और शरिर की अवगाहना (ऊँचाई) 500 धनुष बताई गई। अंतिम तीर्थंकर भगवान महावीर की आयु 72 वर्ष व शरीर की अवगाहना (ऊँचाई) 57 हाथ थी।

जैन दर्शन को समझने के लिए जैन अनुयायियों व अन्य को यह स्वीकार करना होगा तथा पूर्ण श्रद्धा व विश्वास से यह मानना पड़ेगा कि पूर्व रचित साहित्य, वास्तुकला, चित्रकला, स्थापत्य कला, शिलालेख आदि प्रमाण प्राप्त होते है। जिनको झुठलाया नहीं जा सकता है। इसके लिए हमकों प्राचीन ग्रन्थों को आत्मसात करना होगा। जिनवाणी को श्रवण कर उसे समझना व चिन्तन किया जाना परमावश्यक है।

लेखक ने कई मन्दिरों, शिलालेखों व साहित्य का अध्ययन कर संक्षिप्त रूप से पाठकों के सम्मुख प्रस्तुत करने का अथक प्रयास किया, जिससे स्वधर्म व विश्वव्यापी धर्म को जाना जा सके। धर्म तर्क का विषय नहीं है, चिन्तन व आत्मसात करने का विषय है लेखक का प्रयास जैन धर्म के प्राचीनता का पता लगाना है।

प्राचीनकाल में हमारा भारत देश इतना विकसित था कि यह सोने की चिड़िया कहलाता था खगोल शास्त्र में ज्योतिष के आधार पर तारों की गिनती (गणना), सूर्य व चन्द्रमा की गिनती एवं उनका प्रभाव भी बताया गया है। जैन तीर्थंकरों एवं केवली भगवंतों द्वारा अपनी विद्वता आराधना व साधना के आधार पर एक जगह पर बैठकर चारों दिशाओं की ओर देख सकते थे एवं घोषणा कर सकते थे, उदाहरणार्थ तारों की संख्या अनन्त है, सूर्य व चन्द्र की संख्या दो–दो बताई है मंगल ग्रह व अन्य गृहों के बारे में भी विस्तृत जानकारी दी है। आज से कुछ वर्ष पूर्व इन बातों को हँसी–मझाक में लिया जाता था, जैसे वनस्पति में जान (प्राण) होते है। सूर्य व चन्द्रमा दो होते है इसे अमेरिका की वैज्ञानिक संस्थाओं ने प्रमाणित किया है।

वनस्पति में प्राण होने की जानकारी प्रसिद्ध वैज्ञानिक श्री जगदीश चन्द्र वसु ने प्र माणित किया है। जो लोग जैन धर्म का मझाक उड़ाते थे वे भी वास्तविकता को समझ गये है। प्राचीन काल में हमारे पूर्वज चन्द्र गृह व मंगल गृह पर निवास करते थे, एवं उनकी ऊँचाई भी अधिक होती थी। जिसे वैज्ञानिकों ने भी स्वीकार किया है।

जैन आगमों का विश्लेषण व लिपीबद्ध ताम्रप्रत्रों में विद्यमान है। कागज का अविष्कार 1400 वर्ष पूर्व में हुआ था जो कि लिपी में ग्रन्थ है 1400 वर्षों के लगभग है हमें एक धर्म को प्राचीन बताकर या बड़ा बताना उचित नहीं है। भारत में कई धर्म प्राचीन है। अन्य धर्म के साहितय को अध्ययन व मनन करना चाहिए।

"अदृश्य लोक" पुस्तक में लेखक ने तीनों लोकों का वर्णन किया है। जम्बूद्वीप, घातकी खण्ड, पुष्कर द्वीप व अन्य द्वीपों व समुद्रो का वर्णन किया है। वर्तमान, भविष्य व भूत कालीन चौबीसीयों का वर्णन किया गया है। Jain Cosmology में लोक–अलोक, देवलोक, 7 नरक, ज्योतिष, लोकान्तिक, ग्रेवेयक व अनुत्तर विमान, सिद्धशिला आदि के साथ ही वहां पर बने हुए जिन मंदिरों आदि का सुन्दर विवेचन करने का प्रयास किया गया है। ब्राह्माण्ड विशाल है, इसका कोई अंत नहीं है। प्रयास यह रहा है कि अदृश्य लोक नामक पुस्तक के माध्यम से संक्षिप्त रूप से अधिक से अधिक जानकारी आप तक पहुँचे व आप इसका अवलोकन कर अपने विचारों को लेखक के पास पहुंचाए। संभवतया यह लेखक का आखिरी प्रयास है। पूर्व में 15 पुस्तकों का प्रकाशन हो चुका है। देविय आदेश से ही यह अंतिम कार्य सम्पन्न करने का प्रयास है। शासन विरूद्ध कुछ लिखने में आया किसी को अच्छा न लगा हो तो हमारे धर्म के अनुसार क्षमायाचना (मिच्छामी दुक्कड़म)

सद्भावी

मोहनलाल बोल्या

प्रकाशक सम्पादक

दिव्य आशीष

परम उपकारी माता-पिता को समर्पित जिनका लेखक ऋणी है

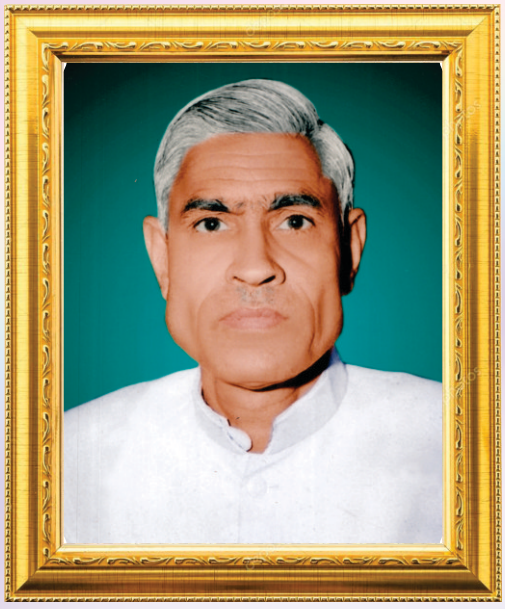

पूज्य पिताजी
स्व. श्री रोशनलाल जी बोल्या

पूज्य माताजी
स्व. श्रीमती गुलाबदेवी जी बोल्या

वक्त गुजरता रहा पर साँसे थमी सी है,
मुस्कुरा रहे हैं हम पर आँखों में नमी सी है।
साथ हमारे ये जहां है सारा,
पर हमको तो बहुत ज्यादा आपकी कमी सी है ।

लेखक का अभिमत

जैन धर्म के कुछ भाग का अध्ययन, पठन, मनन, चिन्तन व व्यवहार जगत के अनुभव के आधार पर मेरा अभिमत है कि जैन धर्म विश्व में सबसे प्राचीन, वैज्ञानिक, सार्वभोम व सार्वभोम से ऊपर है, इसका वर्णन अन्य धर्मों में कही नहीं है, सिद्धान्तो व परम्पराओं में विभिन्नता है।

वर्तमान में मैं जैन धर्म के आचार्य भगवंतों व अन्य संत सतियों से क्षमा मांगते हुए यह अनुरोध करना चाहुँगा कि जैन धर्म की बारिकियों को विज्ञान से जोड़कर समझाने का उपदेश प्रदान करें। आज की नई पीढ़ी के नवयुवकों को जैन धर्म के प्रति आकर्षित करने की महती आवश्यकता है। मैंने आगम की गणित को समझने का प्रयास किया, विभिन्न सम्प्रदायों के आचार्य भगवंतों व विद्वानों गुरूजनों से चर्चा की, लेकिन उनसे मैं संतुष्ट नहीं हुआ। सारांश में एक ही उत्तर मिलता कि आगमों में व अन्य शास्त्रों में लिखा असत्य नहीं है। इस हेतु इतना ही निवेदन है कि इतिहास को बिना तोड़े–मरोड़े धर्म को समझना चाहिए। जैन धर्म को समझने के लिए इसे दो भागों में विभक्त किया जा सकता है। (1) धर्म का कठोर भाग (2) सरल भाग

आचार्य भगवंत धर्म के कठोर (कठिन) भाग को ही प्रवचन के माध्यम से समझाने का अथक प्रयास करते हैं जो कि प्रायः समझ में आना कठिन है। आगम की गणित को नहीं समझाकर प्राचीन काल में तीर्थंकर भगवंतों की ऊँचाई (अवगाहना) उम्र आदि को यदि वैज्ञानिक, धार्मिक, धर्मशास्त्र, समाज शास्त्र पुरातत्व के मतानुसार समझाने का प्रयास किया जाए तो आगमों पर विश्वास बढ़ेगा और वे सत्यता को अनुभव कर सकेंगे, लेखक न इस हेतु कुछ प्रयास अपनी पूर्व प्रकाशित पुस्तकों "सिरोही एवं पाली जिले के जैन मंदिर' व 'जिन दिग्दर्शन' में किया है।

आधुनिक युग में साहित्य को पढ़ने की रूचि नहीं है। आचार्य भगवंतों, साधु संत भी शोध करने वालों को प्रोत्साहित भी नहीं करते है। ज्ञान बढ़ाने के लिए ज्ञान भण्डार, पुस्तकालयों को भी स्थापित किए गये हैं लेकिन उनकी दुर्दशा हो रही है। साधु–भगवंत भी अपने नाम की लोलुपता के कारण इतनी अधिक पुस्तकों का प्रकाशन कराते हैं जिनका उपयोग बहुत कम हो रहा है, यहाँ तक की दीमक लगते देखी है। प्राचीन आचार्यो के हस्तलिखित ग्रन्थों को एक कोने में ढेर के रूप में देखा जा सकता है, ज्ञान की कितनी विराधना हो रही है, इस पर मनन व चिन्तन करने की आवश्यकता है।

आज हमें सम्प्रदायवाद व गच्छवाद से उपर उठकर चिन्तन करना है, यदि हम गच्छवाद व छोटे–बड़े का भेद रखेंगे तो वह समय दूर नहीं कि जैन धर्म को नाम मात्र के लिए जाना जाएगा। इस मतभेद की वजह से नूतन पीढ़ी अन्य धर्मों की ओर अग्रसर हो रही है और अर्न्तजातीय विवाह व अन्य सामाजिक कुरितियों की वजह से जैन धर्म से पलायन करने वालों की संख्या बढ़ रही है। आज से 2200 वर्ष पूर्व जैन धर्म के अनुयायियों की संख्या 40 करोड़ थी। वर्तमान में पूरे विश्व में जैन धर्म के अनुयायियों की संख्या 70 लाख के करीब है।

आज वृद्ध–माता–पिता की कोई संभाल नही हो रही है। घर के बजाय उन्हें वृद्धाश्रम की शरण लेनी पड़ रही है, अपने परिवार के सदस्यों को धार्मिक ज्ञान व सुसंस्कार नहीं मिल रहे हैं। उन्हें कोई सहयोग नहीं दिया जा रहा है, समुचित इलाज भी नहीं हो पा रहा है।

आज नाम की लोलुपता की वजह से प्राचीन मंदिरों के स्थान पर नूतन मंदिरों का निर्माण कर प्राचीनता को नष्ट किया जा रहा है। इससे भगवान की प्रतिमा व कला नष्ट हो जायेगी। आवश्यकता है कि प्राचीनता को संरक्षण प्रदान किया जाये व अति आवश्यक होने पर ही नूतन मंदिरों को बनाया जाये, इस हेतु सर्वज्ञ श्री हेमचन्द्राचार्य ने भी लिखा था। आज मंदिर विशाल बनाये जा रहे है, प्राचीन मंदिरों को जीर्णोद्धार के नाम पर तोड़कर नूतन मंदिरों का निर्माण हो रहा है। जिनमें सैंकड़ों की संख्या में प्रतिमाएँ स्थापित की जा रही है, भले ही वहां उनको पूजने वाले भी उपलब्ध नहीं होते हैं। इस प्रकार होने वाली अदूरदर्शिता व असातना का दोषी कौन है ? चिन्तन व मनन करने की आवश्यकता है। मेवाड़ क्षेत्र में वर्तमान में कई मंदिर है, वहाँ पर कोई जैन परिवार नहीं रहता है, न कोई पुजारी है। मंदिर खण्डहर होते जा रहे है, उनको कोई संभालने वाले नहीं है साधु–साध्वियों के विचरण न होने की वजह से जो कभी मूर्तिपूजक समाज के सदस्य थे वे अन्य समुदायों में सम्मिलित हो गये। मूर्तिपूजक समाज के साधु–साध्वी पालीताणा, सूरत, अहमदाबाद, आदि क्षेत्रों में समूह के रूप में विचरण करते है, ऐसा उल्लेख "मेरी मेवाड़ यात्रा" नामक पुस्तक जो श्री विद्या विजय जी म.सा. द्वारा लिखित में है।

मेवाड़ के सदस्य धर्मप्रेमी व त्यागवृत्ती के है लेकिन अधिकतर सामान्य स्तर के है। मूर्तिपूजक समाज के आचार्य के साथ 25 से 60 का समूह होता है, जो एक साथ विहार करते है व एक ही स्थान पर ठहरते है। यह संभव है इतनी बड़ी संख्या के लिए पर्याप्त स्थान, गोचरी आदि की व्यवस्था न हो, अतः दो–चार साधु साध्वीयों को विभिन्न ग्रामों में चातुर्मास की स्वीकृति देकर जैन धर्म के प्रचार–प्रसार करने में सहयोग देना चाहिये। मूर्तिपूजक समाज के आचार्यों व अन्य गुरू भगवंतों ने ही जैन साहित्य की रचना की है जो वर्तमान में उपलब्ध है, ऐसा सभी सम्प्रदाय/समुदाय वाले भी मानते है। अन्य समाज के आचार्य भगवंतो ने उसी आधार पर कम

ज्यादा करके रचना कर प्रकाशित करवाये उदयपुर शहर में पू. श्री जवेरसागर जी म.सा. ने अनवरत 8 चातुर्मास कर मूर्तिपूजक समाज को जागृत करने का सराहनीय प्रयास किया था। समाज को इससे शिक्षा ग्रहण करनी चाहिए।

जैन धर्म के सिद्धान्तों को लेकर सभी समाज के बंधुओं का ध्यान आकर्षित करना चाहुँगा कि (1) जैन धर्म को विघटन से बचाया जाए। (2) अपनी–अपनी मान्यताओं के अनुसार जैन धर्म के मूल सिद्धान्तों को मानते हुए एकता का परिचय दे। केवल भगवान महावीर जन्म कल्याणक व जय करने से एकता संभव नहीं। जैन धर्म को एकता के सूत्र में बांधने के लिए सर्वप्रथम सभी जैन के साधु–साध्वी, मूर्ति–पूजक, स्थानकवासी, तेरापंथी दिगम्बर आदि एक साथ मिलकर अपने–अपने विचारों के अनुकूल बैठक करें। सभी सम्प्रदाय बिना किसी भेदभाव के अपनी मान्यताओं व परम्पराओं का पालन करे, एक दूसरे की आलोचना से बचना चाहिए। आलोचना से तीसरा व्यक्ति, समाज या सरकार लाभ उठाते है। साहित्य की रक्षा हेतु प्रयास होना चाहिये। साधु संतो के उपदेश से साहित्य प्रकाशन हेतु राशि उपलब्ध होती है, लेकिन शोधार्थी, ज्ञान भण्डार व पुस्तकालय के लिए राशि का अभाव रहता है।

साधु भगवंत, सम्यग् ज्ञान, सम्यर्ग दर्शन, सम्यग् चारित्र के साथ सम्यग् तप का उपदेश प्रदान करते है। तप करने से ही मोक्ष प्राप्त होता है। लेकिन यदि किसी को सम्यग दर्शन ही नहीं है उसकी जानकारी का अभाव है यदि ऐसा व्यक्ति कितना ही तप कर ले, मोक्ष की साधना नहीं हो सकती है सम्यग् दर्शन को समझाने की आज महत्ती आवश्यकता है।

आज ज्ञान देने के लिए छोटे–छोटे नाटक, चित्रकथा का उपयोग उचित रहेगा। तीर्थंकर चरित्र को भी संचार माध्यमों से सरल भाषा व सरल भाव से समझाया जाना चाहिये, जिससे उन्हें शीघ्र व स्थायी रूप से याद हो जाए। इतिहास को सही रूप में प्रस्तुत करना चाहिये। मंदिर प्रतिष्ठा के समय तीर्थंकर भगवान को पाठशाला गमन का दृश्य दिखाया जाता है, जबकि भगवान महावीर के अतिरिक्त किसी भी भगवान का पाठशाला गमन नहीं हुआ, लेकिन दृश्य दिखाया जाता है।

वर्तमान में मूर्तिपूजक समाज में धर्म को पूजा पाठ, स्वामी वात्सलय के रूप में समझा जाता है। स्थानकवासी, गौतम परसादी, दया पात्रों के नाम से जाना जाता है, इसमें अपार मात्रा में धन का अपव्यय होता है। इस राशि का उपयोग शोध कार्य, चित्रकथा, धार्मिक पाठशालाओं, संस्कार शिविरों व धर्म के प्रचार प्रसार में कराया जाने का अनुरोध है।

मंदिरों का इतिहास लिखने के पश्चात्, आगम, तीर्थंकरों का परिचय, जिन दिग्दर्शन, मरूभूमि के मंदिरों का कार्य सम्पन्न करने पर श्री केशरिया जी तीर्थ का इतिहास लिखने का कार्य

श्री किकाभाई ट्रस्ट के अनुरोध पर पुरा किया।

अदृश्य लोक बाबत भी पुस्तक लिखने की भावना बनी। लेखन सामग्री कर चयन भी कर लिया गया, परन्तु स्वास्थ्य की अनुकुलता न होने की वजह से पारिवारिक बंधुओं का भी विरोध होने से यह प्रकाशन की योजना स्थगित कर दी गई।

वर्ष 2022 के मार्च माह की 11 तारीख को अचानक जे.के. पारस चिकित्सालय में अस्वस्थ होने पर हार्ट की धड़कने रूक जाने से मैंने करीबन 4 घण्टे का समय परलोक गमन में व्यतीत किया यद्यपि मेरी देह चिकित्सालय कक्ष में ही थी। मुझे ऐसा लगा कि कोई मुझे उठाकर उपर की ओर ले गया। एक विशाल भवन में मुझे बैठाया गया, उपदेश चल रहा था, उस भवन में देवी–देवता व अन्य उपदेश श्रवण कर रहे थे। आलौकिक दृश्य था। मेरे को आदेश दिया गया कि आप खड़े हो जावे, मैं खड़ा हो गया। इस व्यक्ति का यहां पर क्यों लाया गया है ? इसे तो अभी बचा हुआ कार्य करना है, इसे वापस ले जाओ। उधर हॉस्पीटल में चिकित्सक मेरा हार्ट चालू करने का प्रयास कर रहे थे, ऑक्सीजन देने व पम्पिंग करने का बहुत प्रयास किया था, आखिर में इलेक्ट्रीक शॉक लगाया गया। शरीर में हलचल हुई, परलोक की यात्रा कर आत्मा वापस शरीर में प्रवेश कर गई। सभी आश्चर्यचकित थे। जब यह बात मैंने अपने पारिवारिकजनों को बताई तो सभी का कहना था कि आप जो धार्मिक ज्ञान प्रसार का लेखन व प्रकाशन कार्य कर रहे है, उसे आप करते रहे, शायद यही भगवान का आदेश है।

पुनः यह पुस्तक 'अदृश्य लोक' प्रकाशित करने का मानस देवीय कृपा का प्रसाद मानकर कर रहा हूँ। इसमें आपको तीनों लोकों का उर्द्धव लोक, मध्यलोक व अर्द्धलोक का वर्णन मिलेगा। जम्बूद्विप व अन्य द्विप व पर्वतों का सुन्दर दिग्दर्शन आप कर पायेंगे। यह कार्य समर्पित करता हूँ परम पिता परमात्मा को, जिनके आदेश की पालना हेतु यह रूका हुआ कार्य किया गया है।

पुस्तक बाबत् अपने विचारों का अवश्य अवगत करावें। पुस्तक के बारे में लोकाकित कर सकते हैं, स्थिर रहना, यात्रा करना, विचारों को आलोकित की गई है जो प्रकाशमान है, देखा व अनुभव किया जा सकता है, जिसका वर्णन किया गया है।

मेरे शब्दों से लेखन से किसी भी सदसय अथवा समाज के प्रबुद्धजनों को बुरा लगा हो तो मिच्छामि दुक्कड़म।

सद्भावी

मोहनलाल बोल्या

लेखक, प्रकाशक एवं सम्पादक

शुभ संदेश

श्री जैन श्वेताम्बर महासभा, उदयपुर

श्री तेजसिंह बोल्या
अध्यक्ष

श्री कुलदीप नाहर
मंत्री

आदरणीय श्री मोहनलाल जी बोल्या सा.

सादर जय जिनेन्द्र ।

आपके द्वारा लिखित, संकलित व प्रकाशित 'उदयपुर शहर के जैन मंदिर', 'मेवाड़ के जैन मंदिर', व भारतवर्ष के मुख्य जैन मंदिरों के इतिहास के बारे में पढ़कर जो जानकारी प्राप्त हुई है वह अद्वितिय है। आपका स्वास्थ्य अनूकुल नहीं होने एवं आंखों की रोशनी कम हो जाने से देख एवं पढ़ नहीं पाने के उपरांत भी आपने जो प्रकाशन किया है, वह आश्चर्यजनक है।

अब आपकी एक और पुस्तक ''अदृश्य से आलोक'' प्रकाशित होने जा रही है। यह पुस्तक आपके सभी कीर्तिमान में एक मील का पत्थर सिद्ध होगा।

शासनदेव से यही प्रार्थना करते हैं कि आप दीर्घायु हो और स्वस्थ रहें और आगे भी शासन देव की इसी प्रकार सेवा देते रहें।

सदैव आपके शुभाकांक्षी

(श्री तेजसिंह बोल्या)
अध्यक्ष

(कुलदीप नाहर)
मंत्री

श्री जैन श्वेताम्बर महासभा, उदयपुर

शुभ संदेश

श्री जैन श्वेताम्बर चतराम का उपासरा, उदयपुर

श्री रणजीतसिंह सरूपरिया
अध्यक्ष

श्री तेजसिंह बोल्या
सचिव

प्रतिष्ठा में श्री मोहनलाल जी बोल्या सा.

सादर जय जिनेन्द्र ।

आपके निरन्तर प्रकाशित 'उदयपुर शहर के जैन मंदिर', 'मेवाड़ के जैन मंदिर' व भारतवर्ष के मुख्य जैन मंदिरों के इतिहास के बारे में पढ़कर जो जानकारी प्राप्त हुई है वह अद्वितिय है। कमजोर दृष्टि एवं स्वास्थ्य प्रतिकूल होने के बावजूद भी आप निरन्तर प्रकाशन कार्य कर रहे हैं, वह अनुमोदनीय है, प्रेरणादायक कार्य है, अतएव आपका अभिनन्दन ।

वर्तमान में आप अपनी नई पुस्तक ''अदृश्य से आलोक'' के प्रकाशन कार्य में रत है। विश्वास है इस पुस्तक से भी पाठकों को नवीन जानकारियां मिलेगी।

हम जिनेश्वर प्रभु से यह प्रार्थना करते हैं कि आप शतायु हो और स्वस्थ रहकर ऐसे ही प्रकाशन करते रहें, जिन शासन की यूं ही सेवा देते रहें।

सदैव आपके शुभाकांक्षी

Ranjeet Singh

(रणजीतसिंह सरूपरिया)
अध्यक्ष

(श्री तेजसिंह बोल्या)
सचिव

श्री जैन श्वेताम्बर चतराम का उपासरा, उदयपुर

शुभ संदेश

बड़े भ्राता तुल्य, सरस्वती कृपा पात्र, जिनशासन प्रेमी, धर्म श्रद्धा सम्पन्न,
श्रावक प्रवर श्री मोहनलाल जी साहब बोल्या,

सादर जय जिनेन्द्र ।

यह जानकार अत्यन्त प्रसन्नता हुई कि आपका स्वास्थ्य अनुकुल नहीं होने के बावजुद भी "अदृश्य लोक" पर पुस्तक प्रकाशित करने जा रहे हैं। इसमें अदृश्य जगत से जुड़ी हुई महत्वपूर्ण जानकारियां मिलेगी। अद्योलोक, मध्यलोक व उर्द्धवलोक बाबत् सम्पूर्ण जानकारी को आपने आगमों से संग्रहित कर इसे मय चित्रों के प्रकाशित किया है, ताकि आमजन को इसे समझने में भी सहायता मिलेगी। आपका यह सराहनीय प्रयास मानव मात्र के लिए उपयोगी होगा।

आपने पूर्व में 15 पुस्तकों का प्रकाशन किया है, यह 16वीं पुस्तक अब धर्मप्रेमी ज्ञान पिपासु व शोध कार्य में अग्रणी बंधुओं के लिए प्रेरणादायक होगी। खगोल विज्ञान के सम्बन्ध में उपलब्ध ग्रन्थों को सरल भाषा में जन साधारण के पास पहुंचाने का उत्तम कार्य आप द्वारा किया गया है। जो सराहनीय है। आप इस हेतु बधाई के पात्र है।

आपने पूर्व में मेवाड़–वागड़ मारवाड़ (सिरोही व पाली जिलों) व मरूभूमि के मन्दिरों का इतिहास उत्कीर्ण लेखों व उसकी प्राचीनता को दर्शाया, जिसे साधु–साध्वी, श्रावक–श्राविकाएँ लाभान्वित हुए। साथ ही यह प्रकाशन उपयोगी सिद्ध हुआ है।

इस भव में आप स्वस्थ एवं दीर्घायु रहे ताकि समाज व धर्म उपयोगी साहित्य का सृजन कर सके। इसी तरह से जिन शासन देव की अनुकम्पा से ज्ञान का प्रकाश फैलाते रहे।

यही मेरी आपके प्रति शुभकामनाएं है। पुनः आपका आभार व धन्यवाद...

(हरकलाल पामेचा)
सेवानिवृत प्राध्यापक (अंग्रेजी)
M.A. (Eng., Eco) B.Sc, M.Ed
स्वाध्यायी, समाजसेवी, इतिहास,
निवासी देलवाड़ा (मेवाड़), जिला राजसमन्द (राज.)
मोबाईल : 94685 79070

पूर्व पुस्तकों के प्रति विद्वानों के मत

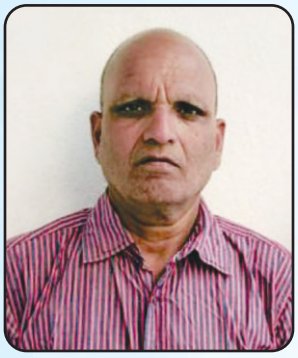

सांस्कृतिक एवं भौगोलिक विविधता से समृद्ध तथा जैन धर्म संस्कृति और शिल्प विशिष्ठता के लिए तथा शौय और पराक्रम के लिए विश्व विख्यात राजस्थान प्रान्त के "मरूधरा क्षेत्र के प्रमुख जैन श्वेताम्बर व अन्य मन्दिर" पर आधारित इस पुस्तक (अंक) का प्रकाशन करके लेखक एवं सम्पादक श्रीमान् मोहनलाल बोल्या तथा संपादक एंव संशोधक श्रीमान हरकलालजी पामेचा सा. और प्रकाशन में सहयोगी दल के द्वारा जनांकांक्षा अनुरूप अद्वितीय कार्य किया है।

इस पुस्तक (अंक) के माध्यम से लेखक, संपादक एवं संशोधक ने "मरूधरा क्षेत्र में स्थित प्रमुख जैन श्वेताम्बर व अन्य मन्दिर" को विश्व के सांस्कृतिक और धार्मिक मानचित्र में पुनर्रस्थापित करने का बेजोड़ कार्य किया है। इसके साथ–साथ जैन धर्म की पूजा पद्धति, रीति रिवाज और परम्पराओं को उभार कर लोक जीवन में नव उत्साह, उमंग और उजास भरने का सफल प्रयास किया गया है।

इस पुस्तक में अंकित अनुक्रमणिका को प्रथम दृष्टया देखते ही सुधी पाठक बरबस सम्पूर्ण पुस्तक को पढ़ने के लिए प्रेरित होते हैं। पुस्तक का कलेवर, चित्रण, मुद्रण, विश्व स्तरीय विदेशी और भारतीय विद्वानों के सारगर्भित मतों को प्रकाशित (उद्घृति) करने का प्रयास इसमें चार चाँद लगा देता है।

यह पुस्तक धर्म (जैन) संस्कृति तथा स्थापत्य कला का पावन त्रिवेणी संगम प्रतीत होता है। इस पुस्तक में मुद्रित प्रत्येक पृष्ठ पर अंकित सामग्री ज्ञानवर्द्धक और चित्रण मनमोहक है।

श्रीमान् मोहनलाल जी बोल्या सा. (संकलन, लेखक एवं प्रधान संपादक) तथा श्रीमान् हरकलाल जी पामेचा सा. (सह संपादक एवं संशोधक) गण विद्वान एवं अनुभवी है जिनके सद्प्रयास से यह गुरूतर कार्य सफलता को प्राप्त कर सहा है।

इस हेतु इनका अभिनन्दन, अभिवादन व शुभकामनाओं के साथ, सादर

दिनांक : 14.01.2022

रमेश कुमार वैष्णव

(सेवानिवृत जिला शिक्षा अधिकारी)

(पूज्य पामेचा सा. का एक शिष्य)

पूर्व पुस्तकों के प्रति विद्वानों के मत

'मरुधरा क्षेत्र के प्रमुख जैन श्वेताम्बर एवं अन्य मंदिर' नामित पुस्तकजिसके संकलनकर्ता संपादक एवं लेखक श्री बोल्या मोहनलाल जी एवं संपादक संशोधक श्री हरकलाल जी पामेचा, मेरे सामने है। यद्यपि मैं स्वयं इस पुस्तक के बारे में कुछ भी कह सकने की पात्रता नहीं रहता हूं फिर भी इस विशिष्ट पुस्तक को देखकर जो मुझे लगा उन विचारों को शब्दबद्ध कर रहा हूं। इस पुस्तक की साज–सज्जा और छपाई इत्यादि बहुत ही आकर्षक है, साथ ही इसके अंदर संजोई गई सामग्री भी पठनीय तथा सारगर्भित है।

इस प्रकार की पुस्तकें वास्तव में समाज की आने वाली पीढ़ियों के लिए आवश्यक दिशा निर्देश का काम करती है। ऐसी पुस्तकें पूर्वकालिक राजस्थान में निर्मित जैन मंदिरों, उनके भव्य साज–सज्जा तथा दर्शनीय स्थापत्य को तो दर्शाती ही हैं, साथ ही इनके पाठक को यह भी समझ में आता है कि तत्कालीन कलाकारों की मेहनत (जो संभवतः पीढ़ियों तक चलती रही होगी) ने किस विशिष्ट भाव और श्रम से इन स्थापत्यों का निर्माण किया होगा। यह सही है कि इन मंदिरों की देखरेख करने वाली आज कोई सुयोग्य व्यवस्था नहीं है, किंतु समाज की निष्क्रियता ही इसका प्रमुख रूप से मूल कारण है।

किसी भी दर्शन या मत का प्रदर्शन करने के लिए कुछ न कुछ स्थानबद्ध और तुलनात्मक रूप से स्थाई संकेत आवश्यक होते हैं और इस दृष्टिकोण से यह सभी स्थापत्य, जैन तीर्थंकरों के महान त्याग को स्मरण कराने के संकेत मात्र है। सर्वस्व त्याग करने वाले महान तीर्थंकरों को निश्चित रूप से इस प्रकार के किसी स्थापत्य की आवश्यकता तो नहीं रही होगी परंतु तत्कालीन समाज ने उनके त्याग की पराकाष्ठा को पहचान कर उनके लिए इस प्रकार के परिसर निर्मित किए। दूसरी ओर सर्व सामान्य लोगों को भविष्य में भी सदा सर्वदा के लिए प्रेरणा मिलती रहने के उद्देश्य से भी इन भव्य दिव्य स्थापत्य से युक्त मंदिरों का निर्माण किया जाता रहा होगा।

यह अलग बात है कि जैन परंपरा के अंतर्गत संतो के भी भिन्न भिन्न प्रकार के मत हैं, जिसके फलस्वरूप इसकी अनेक शाखाएं बन चुकी हैं। निश्चित रूप से इसमें कहीं ना कहीं हमारी सही समझ का अभाव है अन्यथा इस प्रकार की समस्या उठती ही नहीं । वैसे भी भविष्य के गर्भ में क्या छुपा है उसे पहचानना बड़ा मुश्किल होता है। भारत पर होने वाले विदेशी मजहब

आधारित तत्कालीन आक्रमणों की दुर्दांत आंधी में इनकी सुरक्षा के प्रश्न भी उपस्थित हुए होंगे।

हमें लगता है कि भारत के लगभग सभी क्षेत्रों में इस प्रकार के भव्य और दिव्य परिसर निर्मित हुए होंगे, किंतु उन्हें भी इन आक्रमणों की आंधी का सामना करना पड़ा होगा और संभवत योग्य सुरक्षा के अभाव में उन्हें तोड़फोड़ कर नष्ट कर दिया गया होगा । राजस्थान की धरती पर निश्चित ही भामाशाह जैसे ही शूर–वीरों ने इन परिसरों की रक्षा अपनी प्राण की बाजी लगाकर की होगी तब ही तो यह प्राचीन मंदिर आज भी हमारे सामने सुरक्षित रह सके हैं। मुझे लगता है कि इन शूरवीरों के बलिदान की गाथा भी इस प्रकार की पुस्तकों में निश्चित रूप से संकलित करना चाहिए, जिससे की भविष्य की पीढियों को प्रेरणा भी मिले की 'नमो अरिहंताणं' का सही सही अर्थ क्या होता है। कई बार अतिरेक में हम शब्द के वास्तविक अर्थ को तो बिल्कुल ही भूल जाते हैं और उसके आसपास मनमाने अर्थ के इतने आवरण बिछा देते हैं कि वास्तविक अर्थ का ही लोप हो जाता है और सामान्य वाणी तथा कर्म में भी हिंसा को ढूंढने लगते हैं।

इस अतिरेक से हमको बचना चाहिए और जो भविष्य के लिए आवश्यक है। इस प्रकार के कदम उठाने वाली नई पीढ़ी को तैयार करने की विधा, तथा उसे बलवान बनाते जाने की दिशा में भी कदम उठाने चाहिए। स्मरण रहे, समृद्ध भारत की थातियों को सुरक्षित रख सके ऐसी पीढ़ी ही भविष्य में इन भव्य दिव्य परिसरों की रक्षा करने में समर्थ होगी ।

यह पुस्तक निश्चित रूप से पठनीय एवं संग्रह योग्य है। ऐसी पुस्तकें विश्व की पीढ़ी को समुचित मार्गदर्शन करती रहेंगी। इसके लिए संपादक लेखक संशोधक एवं सभी सहयोगी जन प्रशंसा के पात्र हैं, और आप सभी सज्जनों के लिए अनेकानेक शुभकामनाएं।

सादर धन्यवाद।

डॉ. जगदीश व्यास, मुम्बई
भूतपूर्व वैज्ञानिक अधिकारी
भा.प.अ.के., मुंबई

पूर्व पुस्तकों के प्रति विद्वानों के मत

लेखक एवं संकलनकर्ता श्री मोहनलाल जी बोल्या तथा संपादक एवं संशोधन श्री हरकलाल जी पामेचा द्वारा प्रकाशित पुस्तक "मरूधरा क्षेत्र के प्रमुख जैन श्वेताम्बर व अन्य मन्दिर" एक दुर्लभ एवं ऐतिहासिक रचना है। सम्पूर्ण राजस्थान के प्राचीन व ऐतिहासिक जैन मंदिरों निर्माण का इतिहास, स्थापत्य कला, निर्माणकर्ता का त्याग व बलिदान तथा आकर्षक फोटोग्राफ का समायोजन इस पुस्तक अनूठा एवं संकलन योग्य बना दिया है।

इसके लेखन, संकलन, संशोधन एवं संपादन के लिए श्री मोहनलाल जी बोल्या एवं श्री हरकलाल जी पामेचा को हार्दिक बधाई और शुभकामनाएं

आपका यह अनूठा प्रयास आने वाली पीढ़ियों के लिए स्मरणीय रहेगा। मेरा व राजस्थान की सम्पूर्ण जनता का आपको हार्दिक धन्यवाद एवं आभार

सादर प्रणाम सहित..

कन्हैयालाल पुरोहित

सेवानिवृत जिला शिक्षा अधिकारी (मा.शि.)

(श्री हरकलाल जी पामेचा का सहपाठी)

चित्तौड़गढ़

पुस्तक प्रकाशन में अर्थ सहयोगी

1) श्रीमान् ललित शाह – अहमदाबाद
2) श्री जैन श्वेताम्बर महासभा, उदयपुर
3) श्री जैन श्वेताम्बर चतराम का ओपासरा, उदयपुर
4) श्री जैन श्वेताम्बर श्री वासुपूज्य महाराज मंदिर ट्रस्ट, उदयपुर (दादाबाड़ी, सूरजपोल)
5) श्री राजेन्द्र जी लोढ़ा (लेखक दामाद)
6) श्रीमती नीरु पत्नि श्री राजेन्द्र जी लोढ़ा (लेखक पुत्री)
7) सुश्री हितिका लोढ़ा पुत्री श्री राजेन्द्र जी लोढ़ा (लेखक दोहित्री)
8) श्री लविश पुत्र श्री राजेन्द्र जी लोढ़ा (लेखक दौहित्र)
9) श्री येवन्ती कुमार जी बोलिया, उदयपुर
10) श्रीमती सुशीला जी बोल्या, उदयपुर (लेखक धर्मपत्नी)
11) श्रीमती निशी पत्नि स्व. श्री अशोक जी खमेसरा, नि. मुम्बई (लेखक पुत्री)

आभार प्रदर्शन

1) श्री हरकलाल जी पामेचा, देलवाड़ा (आभार प्रदर्शन आलोक)
2) श्री प्रकाश जी जैन (उदयपुर)
3) श्री गजेन्द्र जी सुराणा (उदयपुर)
4) श्री छगनलाल जी नलवाया (उदयपुर)

संदर्भित पुस्तकों की सूची

1) जिनेन्दु – लेखिका
2) Jain Cosmology - अलोक में लोक, महावीर भवन, पाली
3) जम्बूद्वीप दर्शन – हस्तिनापुर
4) जम्बूद्वीप प्रज्ञप्ति सूत्र – ब्यावर
5) सम्यग् दर्शन, जून 2022
6) आचार्य मृदुरत्न सूरिश्वर जी महाराज साहब के प्रवचन सार
7) जम्बूद्वीप – ज्ञानमतीजी माताजी

लेखक का जीवन परिचय

नाम	:	**मोहनलाल बोल्या**
माता	:	स्व. श्रीमती गुलाबकुंवर जी बोल्या
पिता	:	स्व. श्री रोशनलाल जी बोल्या
जन्म स्थल	:	उदयपुर
जन्म दिनांक	:	15 जून, 1936
शिक्षा	:	बी.कॉम, एम.ए. (समाजशास्त्र)
पत्नी	:	श्रीमती सुशीला बोल्या
धर्म	:	जैन धर्म, मूर्तिपूजक समाज
व्यवसाय	:	सेवानिवृत जिला परिवीक्षा एवं समाज कल्याण अधिकारी

प्रकाशित, संपादित पुस्तकों की सूची :

- उदयपुर नगर के जैन श्वेताम्बर मंदिर एवं मेवाड़ के प्राचीन जैन तीर्थ
- श्री जैन श्वेताम्बर तीर्थ – केशरिया जी
- मेवाड़ के प्राचीन जैन तीर्थ – देलवाड़ा के जैन मंदिर
- नवकार मंत्र स्मारिका
- मेवाड़ के जैन तीर्थ भाग – 1
- नमोकार मंत्र – महामंत्र (मौन साधना, मंत्र)
- मेवाड़ के जैन तीर्थ भाग – 2
- मेवाड़ के जैन तीर्थ भाग – 3
- वागड़ प्रदेश के जैन श्वेतामबर मंदिर
- सिरोही एवं पाली जिले के जैन श्वेताम्बर मंदिर
- जैन धर्म का मूल आधार 'आगम'
- जिन दिग्दर्शन
- जैन धर्म के 24 तीर्थंकर
- मरुधर क्षेत्र के प्रमुख जैन श्वेताम्बर एवं अन्य मंदिर
- श्री जैन श्वेताम्बर तीर्थ केसरियाजी मेवाड़ (उदयपुर) एवं अन्य तीर्थों का इतिहास
- महासभा दर्शन (मासिक पत्रिका) (जनवरी, 2011 से जनवरी, 2016 तक)

संस्थागत कार्य :

- कार्यकारिणी सदस्य : श्री जैन श्वेताम्बर महासभा, उदयपुर
- संयोजक : ज्ञान खाता
- श्री जैन श्वेताम्बर चतराम का उपासरा, उदयपुर

आत्मिक अभिव्यक्ति / उद्‌बोधन

सेवा में,

सरस्वती कृपा पात्र श्रीमान् मोहनलाल जी साहब बोल्या, उदयपुर

जय जिनेन्द्र

मेदपाट, प्रागवाट, शिविजन पड, मेवाड़ नाम से सुशोभित वीर योग्या वसुंधरा का विश्व में गौरवशाली इतिहास रहा है। त्याग और बलिदान, शक्ति और भक्ति, साहस और शौर्य, वीरो–विरांगनाओं, संतो व साध्वियों, मठों व मंदिरों की पुण्य धरा मेवाड़ की राजधानी उदयपुर के प्रतिष्ठित बोल्या परिवार में श्रीमान् मोहनलालजी बोल्या का जन्म 15 जून, 1936 में हुआ। राज्य सेवा से सेवानिवृति के पश्चात् आपने अपना सम्पूर्ण जीवन जैन धर्म एवं उसकी संस्कृति के विकास हेतु लगाया है। आपने अनवरत प्रयास के माध्यम से अपने कई वर्षों के अथक परिश्रम व प्रयास से जैन समाज को बहुमूल्य व उपयोगी साहित्य प्रदान किया है।

86 बसन्त पार करने के पश्चात् भी आपके मन में यह विचार आया कि अदृश्य लोक बाबत नवीन जानकारी समाज के प्रबुद्धजनों के समक्ष प्रस्तुत करूं। आपने इस हेतु मेरे से सलाह ली। मैंने आपकी वृद्धावस्था व अनेक बीमारियों से ग्रसित होने की वजह से यह कार्य नहीं करने हेतु निवेदन किया। पारिवारिक बंधुओं की भी यही राय थी कि अब आप विश्राम ही करे, जिन्दगी में आपने बहुत काम कर लिया है। लोक–अलोक बाबत् आपने सामग्री का संकलन कर लिया था। केसरिया जैन तीर्थ के इतिहास की पुस्तक भी इसी वर्ष प्रकाशित हो गई थी। अचानक आपका बीमार पड़ना, जे.के. पारस हॉस्पीटल में भर्ती होना, उपचार के दौरान बेहोश होकर गिर पड़ना, हार्ट का बन्द हो जाना, मशीनों का जवाब दे देना, पम्पिंग करना, कृत्रिम श्वास देना, लेकिन कोई फायदा नहीं।

परलोक की यात्रा : मुझे बताया गया कि उस समय सभी परिजन चिंतित हो गये, डॉक्टर्स अपने प्रयास में लगे रहे। श्री बोल्या सा. को ऐसा महसुस हुआ कि कोई देवीय शक्ति उन्हें उठाकर आकाश की ओर ले जा रही है। एक बहुत बड़े भवन में ले जाया गाया, वहां पर प्रवचन चल रहा था। पुरा हॉल देवी–देवताओं व अन्य बंधुओं से भरा हुआ था। उन्हें भी ले जाकर एक आसन पर बैठा दिया गया। प्रवचनकर्ता ने उन्हें खड़े होने का आदेश दिया। वे अपने आसन से खड़े हो गए तो उन्होंने कहा कि इस आदमी को यहाँ पर क्यों लाया गया है ? इसका तो इसका अधुरा कार्य पूर्ण करना है। इसे वापस इसके लोक में ले जाओ। उन्हें वापस परलोक से इस लोक में अधुरा कार्य पूर्ण करने हेतु भेजा गया। उनकी आत्मा ने पुनः शरीर में प्रवेश किया। शरीर में हलचल होने लगी। डॉक्टर ने

इलेक्ट्रीक शॉक भी लगाया। सभी आश्चर्यचकित थे कि 4 घण्टे पश्चात् इनके शरीर में स्पन्दन हुआ। कुछ दिन वेण्टीलेटर पर रखा गया। जनरल वार्ड में शिफ्ट किया गया। धीरे–धीरे मैं स्वस्थ होने लगा। स्वस्थ होने पर जब उन्होंने परलोक गमन व वहाँ के अनुभवों को साझा किया तो सभी पारिवारिक बंधुओं व परिजनों का कहना था कि अब आप अधुरा कार्य पूर्ण करें। श्रीमान् बोल्या साहब को तो इसी का इंतजार था।"

अदृश्य लोक "नामक पुस्तक में आपको मिलेगी कुछ अदृश्य जगत से जुड़ी हुई रहस्यमय जानकारियाँ"

लोक–अलोक बाबत् संक्षिप्त जानकारी

जिसमें धर्मास्तिकाय, अधर्मास्तिकाय, जीव आदि द्रव्य हो, वह लोक कहलाता है, जिसमें आकाश के अतिरिक्त किसी द्रव्य आदि का अस्तित्व न पाया जाय उसे अलोक कहते हैं। लोक 14 राजू प्रमाण है तीन विभाग है (1) अधोलोक (2) मध्यलोक (तिरछा लोक) (3) उर्ध्व लोक।

सुमेरू पर्वत के पास की समभूमि से 900 योजन नीचे से अधोलोक, 900 योजन ऊँचे से ऊँचा लोक प्रारम्भ होता है। उर्ध्वलोक से नीचे ओर अधोलोक से उपर 1800 योजन की मोटाई वाला एवं राजू लम्बा–चौड़ा तिरछा लोक (मध्यलोक है) ऊर्ध्व लोक में सबसे उपर सिद्ध भगवान है। सिद्ध शिला से 1 योजन उपर (4 कोस) अलोक है अंतिम कोस के उपर के छठे भाग में सिद्ध भगवान है।

इसमें नरक गति का विवेचन, नैरायिक जीवों की 3 प्रकार की वेदना का वर्णन, 7 नारकीय का वर्णन, 15 कर्मभूमि, 30 अकर्म भूमियाँ, 56 अन्तरद्वीप क्षेत्र, लवण समुद्र, 2½ द्वीप में ही मनुष्यों की उत्पति जम्बूद्वीप, घातकी खण्ड, अर्द्धपुष्करद्वीप, 132 चन्द्र, 132 सूर्य अढ़ाई द्वीप, पर्वतों, नदियों, द्वीपों, सागरों, नन्दीश्वर द्वीप, भवनपति, वाणव्यतर, ज्योतिषी, वैमानिक देवों का वर्णन, तीनों लोक में देव रहते हैं, भवनपति देव अधोलोक में, तीरछे लोक में बाणव्यतर देव व उर्ध्व लोक में वैमानिक देवों का निवास, चन्द्र, सूर्य आदि की संख्या आदि का विवरण आप इस पुस्तक में पायेंगे। अदृश्य लोक की चित्रमय झाँकी का अवलोकन आप कर सकेंगे। श्रीमान् बोल्या साहब ने अपनी पूर्व की पुस्तकों की तरह इस पुस्तक को तैयार करने में अथक प्रयास किया है। आपको नवीन जानकारी प्रदान की जा रही है। वैमानिक देवों में सात बातें उत्तरोतर बढ़ती जाती है।

(1) अवधि ज्ञान। (2) भाव (3) सुख (4) धुति (5) लेश्या (6) इन्द्रिया विषय (7) अवधि ज्ञान।

4 बातों में देव उत्तरोतर हीन होते हैं।

(1) गति (2) शरीर परिणाम (3) परिग्रह (4) अभिमान

वैमानिक देव विमानों का वर्णन भी आप को मिलेगा

बहुमुखी प्रतिभा के धनी, धर्म श्रद्धा सम्पन्न, श्रावक रत्न, सुसाहित्य रूचि सुश्रावक श्री मोहनलाल जी साहब बोल्या ने मेवाड़, वागड़, सिरोही, जैन मंदिरों के इतिहास लेखन के पुनित कार्य को सम्पन्न करने के पश्चात् भगवान महावीर के उपदेश आगम व जैनों की जनसंख्या पर कलम चलाई थी। नैत्र ज्योति बहुत कमजोर होने व अन्य जटिल बीमारियों से ग्रसित होने पर भी आपने नवकार महामंत्र, महामंत्र साधना, जिन दिग्दर्शन (प्रभु आपके द्वार), 24 तीर्थंकर, मरूधरा के जैन मंदिरों का इतिहास, श्री केसरियाजी जैन तीर्थ का इतिहास आदि महत्वपूर्ण कार्य पुस्तकों के लेखन व संपादन कार्य सम्पन्न किया। शरीर साथ नहीं देता है परन्तु मन को वश में करना कठिन रहता है। मन के विचारों को विश्राम नहीं, जो भी विचार आता है उसे कलमबद्ध करना आपके स्वभाव का अनिवार्य अंग बन गया है।

इतिहास संकलन का कार्य साधारण नहीं है, कथा लेखन में कल्पना का स्थान है, परन्तु इतिहास लेखन में कपोल कल्पना नहीं चलती है, लेखक स्वयं उस समय के वातावरण की तह में जाकर उस इतिहास में पहले जीता है फिर लिखता है यह बहुत ही तटस्थता का कार्य है। यदि तटस्थता और निष्पक्षता का अभाव हो तो इतिहास न केवल खण्डित होता है, बल्कि परम्पराओं के कदाग्रह के कारण सत्य को छिपाने का ओर असत्य को प्रकट करने का दोष लगता है, यह व्यक्ति को मिथ्यात्व तक भी पहुँचा सकता है।

इतिहास लेखन के इस पुनित कार्य में, मैं भी श्रीमान् बोल्या साहब के साथ 18 वर्ष से जुडा हुआ हूँ। आपने देव, गुरू व धर्म के इस पुनित कार्य में जो विश्वास मुझ पर प्रकट किया, उसके लिए हृदय की असीम आस्था से आपका व आपके पारिवारिकजनों का आभार प्रकट करता हूँ। महासभा दर्शन का भी कुशल सम्पादन का कार्य (जनवरी, 2011 से जनवरी, 2016 तक) आपने पूर्ण निष्ठा व योग्यता से सम्पन्न किया।

आपके द्वारा लिखित व सम्पादित पुस्तकों की मांग बराबर आ रही है परन्तु स्टॉक नहीं होने से उसकी पूर्ति नहीं कर पा रहे हैं। शोध कार्यों में इनका बहुत उपयोग हो रहा है व भविष्य में भी होगा। करीबन 10 छात्र–छात्राओं ने अपने शोध कार्य में इनका उपयोग कर पी.एच.डी. की उपाधि प्राप्त की है। वयोवृद्ध सुश्रावक श्री बोल्या जी के लिए इससे अधिक प्रसन्नता क्या हो सकती है। आप मौन साधक है, अपने आप कार्य करते रहते हैं, कॉरोनाकाल में आपने 24 तीर्थंकर व मरूभूमि के जैन मंदिर व श्री केसरियाजी जैन तीर्थ का इतिहास प्रकाशित कर समय को सार्थक किया है।

आपने समाज को बहुत कुछ दिया है। आपके इस कार्य में गुरू भगवंतों, आचार्यों, धर्म–प्रेमी बंधुओं आदि ने प्रकाशन के कार्य में बहुत योगदान दिया है व दे रहे हैं। आप सभी का बहुत–बहुत आभार।

आभार प्रदर्शित करता हूँ मेरी धर्मसहायिका श्रीमती प्रेमदेवी पामेचा, सुपुत्र श्री दिनेश, श्री परमेश, पुत्रवधु श्रीमती अर्चना व श्रीमती सीमा पामेचा, सुपौत्र श्री शुभम, श्री मनन, सुपौत्रियां सुश्री प्रियल, आर्ची, हनी पमोचा, दामाद श्री महेन्द्रजी, सुपुत्री श्रीमती पंकज पोखरना व दौहित्र श्री प्रांजल पोखरना का भी बहुत–बहुत आभार।

मुझे अप्रत्यक्ष रूप से इस कार्य हेतु सहयोग करने वाले प्रिय सुपौत्र स्व. श्री रिषभ को भी इस अवसर पर नहीं भूल सकता हूँ जिसकी मंद मुस्कान आज भी मेरी प्रेरणा का स्त्रोत है। पारिवारिक बंधुओं ने भी समय–समय पर पुस्तक प्रकाशन कार्य हेतु सहयोग दिया, वे भी बधाई के पात्र है।

आपने भारतीय इतिहास, संस्कृति, शिल्पकला, स्थापत्यकला, मूर्तिकला, शिलालेख आदि की जानकारी का लक्ष्य बनाकर देश के जैन केन्द्रों की यात्रा कर अपने मौलिक दृष्टिकोण से समृद्ध किया है। मरूभूमि की कठिन यात्रा कर आपने जैसलमेर व अन्य क्षेत्रों का इतिहास संकलित कर इसे पुस्तककार रूप में प्रकाशित कर आने वाली पीढ़ी हेतु सराहनीय प्रयास किया है। आपने हर धार्मिक स्थल पर स्वयं पहुँच कर सामग्री का संकलन किया है।

परिवार के सभी सदस्यों का सकारात्मक सहयोग आपको बराबर मिलता रहे। यही कामना करता हूँ। आप दिर्घायु हो, मंगलमय हो, स्वस्थ रहे, मस्त रहे, प्रसन्नचित रहकर धर्म एंव संस्कृति की सेवा अनवरत करते रहे, यही भगवान महावीर से प्रार्थना करता हूँ।

अगर लिखने में कुछ अनुचित आया हो तो हृदय के अन्तः करण से क्षमायाचना।

आप सभी से निवेदन हे कि "अदृश्य लोक" का अवश्य अवलोकन करे व अपने अमूल्य सुझाव लेखक को प्रेषित करे तब ही इनका प्रयास सार्थक होगा।

जय महावीर...जय जिनेन्द्र

हरकलाल पामेचा
देलवाड़ा, जिला राजसमन्द
मोबाईल : 94685 79070

आत्मीय और भावनात्मक संदेश : बहुत बड़ा उपहार, आपका आभार

'जिन' दिग्दर्शन के आलोक में भारतीय 'सभ्यता', 'संस्कृति' एवं 'क्रिया' की 'त्रयी' के सम्यक प्रकाश में मेरी साहित्य सृजन की साधना और यात्रा अनवरत जारी है।

'जैन धर्म से संबंधित अनेकानेक (अब तक 16 पुस्तकें प्रकाशित) पुस्तकों के प्रकाशन एवं संकलन कार्य में इस दैवीय कार्य में गुरू भगवन्तों, धर्म प्रेमी संस्थाओर, धर्म प्राण व्यक्तियों का भरपूर आशीर्वाद, मार्गदर्शन और सहयोग मिला है, परन्तु मेरी इस साहित्य सृजन की यात्रा में परम् सहयात्री और सहयोगी रहे है, श्री हरकलाल पामेचा सा. जिन्होंने मेरी इस कठिन और दुरूह यात्रा में हरपल हर कदम पर साथ दिया है।

इनके विचार, वाणी और कर्म की त्रिवेणी की पुष्य सलिला के प्रसाद स्वरूप में ही अब तक प्रकाशित पुस्तकें साकार रूप ले पाई है। मेरे समस्त प्रकाशनों में सह लेखक, सम्पादक एवं संशोधक के गुरूत्तर दायित्व का निर्वहन इन्होंने पूरी निष्ठा, समर्पण ओर प्राणपण से किया है। यहाँ यह कहना यथोचित है कि "Man Propose, God Disposes."

श्री हरकलाल जी पामेचा प्रबुद्ध चिंतक, लेखक, साहित्यकार मिलनसार, शिक्षाविद्, समाजसेवी, धर्मप्राण, प्रखर वक्ता है और सम्मानजनक शिक्षा अधिकारी के रूप में व्याख्याता (अंग्रेजी) के पद से सेवानिवृति पश्चात् समाजसेवा और साहित्य सृजन में अनवरत रूप से लगे हुए है। आप कई शिक्षण संस्थाओं तथा (N.G.O.) समाजसेवी संस्थाओं के संस्थापक सदस्य है। श्री पामेचा सा. की प्रतिभा, कर्त्तव्यनिष्ठता व समर्पण भाव की मैं भूरी–भूरी प्रशंसा करता हूँ। ये सच्चे अर्थों में एक सच्चे जैन है। ये एक आदर्श शिक्षक और पथ प्रदर्शक है। इनके व्यक्तित्व में 'ज्ञान' 'भक्ति' और कर्म तीनों का अद्भुत संयोग है। आपका विराट व्यक्तित्व आपके सम्पर्क में आने वाले हर व्यक्ति को प्रभावित करता है।

मेरा इनसे प्रथम परिचय देलवाड़ा में ही हुआ जब मैं 2005 में देलवाड़ा के जैन मन्दिरों के अवलोकन हेतु गया था। संक्षिप्त बातचीत में, मैं इनके जैन धर्म एवं इतिहास के प्रति लगाव से प्रभावित हुआ। हम दोनों का ध्यातव्य और मंतव्य समान था। एकनिष्ठ उद्देश्य था जैन धर्म, जैन मंदिरों और सांस्कृतिक धरोहरों से जन–जन को पुनः अवगत कराना।

मेरा स्वास्थ्य प्रतिकूल होने और नैत्र दृष्टि क्षीण होने के उपरान्त श्री पामेचा जी के द्वारा मुझे पग–पग हर कदम पर सहयोग और संबल दिया गया, इसी कारण से वृहद संख्या में

पुस्तकों का प्रकाशन संभव और पूर्ण हो सका है। इनके सहयोग के बिना ये दैवीय कार्य कदापि संभव नहीं था। श्री पामेचा सा. जैसे यशस्वी, तपस्वी और मनस्वी व्यक्तित्व के बारे में शब्दों में कहना और लिखना आसान नहीं है। अर्थात् ये अनिर्वचनीय और वर्णनातीत है। फिर भी मैं संक्षेप में इनके बारे में बताने का प्रयास करना उचित समझता हूँ।

नाम	:	हरकलाल पामेचा
जन्म	:	27–08–1945
निवास	:	देलवाड़ा (देवकुल पाटन नगर)
शिक्षा	:	अधिस्नातक (M.A.) आंग्लभाषा, अर्थशास्त्र एवं एम.एड.
व्यवसाय	:	राज्य सेवा से सेवानिवृत प्राध्यापक – अंग्रेजी (R.E.S.)
धर्म सम्प्रदाय	:	जैन धर्म – स्थानकवासी
प्रकाशन कार्य	:	इतिहास के पत्र वाचन–6 प्रकाशित अपनी पत्रिका में 5 आलेख प्रकाशित, जैन मन्दिर, देलवाड़ा पर आकाशवाणी वार्ता (1987) 'Jain Sources of Indian History में देलवाड़ा पर आर्टिकल "राजस्थान की संत परम्परा" अजमेर से प्रकाशित
संस्थागत कार्य	:	पूर्व अध्यक्ष : शिक्षा समिति नागरिक विकास मंच देलवाड़ा संस्थापक सदस्य : बी.एड. कॉलेज, देलवाड़ा, आदर्श विद्या मंदिर, देलवाड़ा
सह संपापक	:	1) मेवाड़ के जैन तीर्थ भाग – 3 2) वागड़ क्षेत्र के जैन श्वेताम्बर मन्दिर 3) सिरोही और पाली जिले के जैन मन्दिर
सह–लेखक	:	1) जैन धर्म का मूल आधार "आगम" 2) जैन दिग्दर्शन
संपादक	:	1) झाला वंश वारिधि 2) राजस्थान की गौरव गाथा
लेखक	:	देलवाड़ा के लाल श्री गुलाबचन्द कटारिया
इतिहास संकलनकर्ता	:	चित्तौड़ प्रांत
आलेख प्रकाश	:	पत्रिकाओं में आलेख प्रकाशित – जैन मन्दिर देलवाड़ा

– नागदा संस्कृति (राजस्थान पत्रिका) हलकारा, मुम्बई,
– खबर सम्राट
– जय राजस्थान, सिद्धार्थ फाउण्डेशन, सुरत,
– सम्यग् दर्शन आदि

पत्रवाचन–राष्ट्रीय व राज्य स्तरीय संगोष्ठी–15 शैक्षिक उद्‌बोधन–महाविद्यालय व विद्यालयों में प्रकाशन–देवकुल पाटन–देलवाड़ा के देवालयों का इतिहास संकलन ।

मेरे द्वारा प्रकाशित पुस्तकों के प्रकाशन में आप और आपके परिवार के सदसयों द्वारा, आर्थिक सहयोग भी प्रदान किया गया। 'जो सोने पर सुहागा' को चरितार्थ करता है।

आपके द्वारा राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय, देलवाड़ा में सरस्वती मंदिर की स्थापना व निर्माण करवाया गया। श्री पामेचा सा. के उत्प्रेरण एवं प्रबोधन से इनके विद्यार्थीगण उच्च पदों पर आसीन हुए है। उनमें से श्री प्रोफेसर आई.वी.त्रिवेदी गुरू गोविन्द जनजातिय विश्वविद्यालय–बांसवाड़ा में Vice Chancellor (उप कुलपति), डॉ. जगदीश व्यास (परमाणु वैज्ञानिक) भाभा एटोमिक रिसर्च सेन्टर, बोम्बे तथा कई शिष्ट लेखाधिकारी, इन्जीनियर, डॉक्टर, चार्टर्ड अकाउटेन्ट, शिक्षा अधिकारी, राजस्व सेवा, पुलिस सेवा तथा सफल व्यवसायी के रूप में पदासीन रहे है।

अन्त में मैं कहना चाहता हूँ कि ईश्वर कृपा से मुझे इनका साथ और सहयोग प्राप्त हुआ जिससे मैं जैन धर्म के आलोक की रश्मि स्वरूप कतिपय पुस्तकों को सुधी पाठकों को प्रस्तुत कर सका। इनका हृदय से बहुत–बहुत आभार, अभिनन्दन।

इनके लिए मैं यह कहना चाहूँगा कि AS 'U' to 'Q' So 'you' to 'me' (जैसे अंग्रेजी शब्द लेखन में 'Q' के साथ 'U' होता ही है, वैसे ही 'आप' 'मेरे' लिए आवश्यक है)

श्री पामेचा सा. मेरे लिए एक अमूल्य उपहार है। इनका पुनः आभार एवं उज्जवल भविष्य की शुभकामनाएं। प्रस्तुत पुस्तक पूर्ण करने में आपका पूर्ण सहयोग रहा। यह कहना भी उचित होगा कि आपके सहयोग से ही यह पुस्तक पूर्ण हो सकी। यही मेरी ओर से उपहार होगा। आत्मिक आभार।

सद्‌भावी

मोहनलाल बोल्या
प्रकाशक सम्पादक